P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-I*September-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# भोपाल के इतिहास में बेगमात (महिला शासक) की भूमिका

**दीपक मालवीय**
शोध छात्र,
समाजशास्त्र विभाग,
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय,
भोपाल, म.प्र.

**फौज़िया अंजुम**
शोध छात्रा,
समाजशास्त्र विभाग,
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय,
भोपाल, म.प्र.

**सारांश**

भोपाल एक ऐसा अनुठा शहर है जो सौन्दर्य का पर्याय कहां जा सकता है इसके सौन्दर्य के साथ ही महिला शासकों की भूमिका का वर्णन भी अनिवार्य लगता हैं यह सुन्दर नगर बसाहर के लिए राजाभोज द्वारा 1010–1015 ई में चुना गया था यहॉ 12 शासकों से राज्य किया जिसमें 4 महिलाएं थी। प्रस्तुत अध्ययन में चारों बेगमों के शासन काल का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया हैं महिलाऍं समाज की विकास प्रक्रिया में प्रारंभ से ही प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से अपनी भूमिकाओं का निर्वाह कर रही हैं। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा भोपाल नगर की महिलओं के शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास में महिला शासक (बैगमात) के द्वारा किये गए प्रत्यत्नों का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है।

**मुख्य शब्द :** शासक, महिला विकास, उन्नति।

**प्रस्तावना**

भोपाल रियासत के प्रमुख शासको ने **गोहर बेगम कुदसिया** (1844 ई. ये 1837 ई.) **सिंकदर जहॉ बेगम** (1844 ई. से 1868 ई.), **शाहजहॉ बेगम** (1864 ई. से 1901 ई.) **सुल्तान जहॉ बेगम** (1901 ई. से 1926 ई.) इन चार महिला शासको के बाद अंतिम शासक **नवाब हमी उल्ला खॉ** थे।

नवाब रियासत की पहली महिला शासक नवाब कुदसिया बेगम (गौहर) थी, और कुदसिया के नाम से प्रसिद्ध थी भोपाल शहर के लिए उनका योगदान उल्लेखनीय हैं। यातायात के साधनो को गती कुदसिया बेगम के कार्यकाल में मिली उनके प्रयत्न से ही मुम्बई से दिल्ली से रेल लाइन द्वारा मिला दिया और होशंगाबाद से भोपाल तक रेल का हिस्सा भोपाल रेल्वे कहलाता था और इसका लाभ मीलो के अनुसार रियासत और कुदसिया बेगम को मिला करता था 18 नवम्बर 1884 ई. को रेलवे का उद्घाटन हुआ। भोपाल में रेलवे स्टेशन बना और रेलवे कॉलोनियॉं बनी उज्जैन को जाने वाले लाईन के बाद भोपाल का स्टेशन जंक्शन बन गया।

**उद्देश्य**

1. भोपाल रियासत की महिला शासको के कार्यों पर प्रकाश डालना।
2. महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए बेगमात के प्रयासों का अध्ययन करना।
3. महिलाओं की शैक्षणिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।

**न्यायप्रिय शासन**

इनके समय में दीवान पर नियुक्ति प्रायः हिन्दुओं से हुआ करती थी जैसे दीवान प्रभुलाल, दीवान खुशीलाल, दीवाने छोटेलाल, किन्तु सरकारी नौकरियों में हिन्दु तथा मुसलमान को समान अवसर दिया जाता था । विदेशियों को नौकरी नहीं दी जाती थी। बेगम अपनी सम्पत्ति को ईश्वर की धरोहर समझती थी उस सम्पत्ति को जनता की भलाई के कार्यों में खर्च किया जाता था बेगमात का खर्च पिता की जागीर से चलता था। मुसलमानो की भाँति उत्सवों पर हिन्दुओं को भी जोड़ा जाता था। मुसलमानो के लिए लेगर तथा हिन्दुओ के लिए सदाव्रत जारी थे।

कुदसिया बेगम को 1876 ई. में देहली दरबार में इंग्लैण्ड की रानी ने अच्छी शासन व्यवस्था पर उनको क्राउन ऑफ इंडिया की उपाधि से सम्मानित किया।

नवाब सिकन्दर जहॉ बेगम द्वारा शिक्षा के प्रयास भोपाल के इतिहास ने नवाब सिकन्दर जहॉ बेगम का वही स्थान है जो भारत के इतिहास में अकबर का।

रियासत की आवश्यकता अनुसार सिकन्दर जहॉ बेगम के द्वारा एक प्रेम की स्थापना की गई जिसका नाम ''मतअबे–सिकन्दरी'' (प्रेस) रखा गया।

नवाब सिकन्दर जहॉ बेगम को बालिकाओ की शिक्षा की चिंता थी उनके द्वारा 1870 ई. में मदरिसा सुलेमानिया के नाम से स्थापति किया गया इस मद्रिसे मे फारसी, उर्दु के साथ अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती थी।

इस मदरिसा में धार्मिक शिक्षा का भी प्रावधान था नवाब सिकन्दर जहॉ बेगम द्वारा दूसरा किसी जाने वाला कार्यालयों का कार्य उर्दु भाषा में होता था उनके द्वारा शहर के बीच में मोती मस्ज़िद और मोती महल का निर्माण कराया गया ।

**नवाज शाहजहॉ बेगम**

शाहजहॉ बेगम ने कुछ योग्य एवं शिक्षित एवं आम महिलाओ को निम्न कार्यक्रमों के दो माह बसंत और शीत ऋतु में तय किये जाते थे। इस विशाल आयोजन की नीव ''परवीन बाजार'' के नाम से डाली। इस बाज़ार में सामान्य वर्ग की महिलाओं को आने की इज़ाजत थी जबकि पुरूषों का प्रवेश वर्जित था।

इस बाजार के सर्वश्रेष्ठ स्टॉल को नवाब बेगम द्वारा पुरूस्कार दिया जाता था। नवाब शाहजहॉ बेगम ने एक पुस्तक में स्वयं लिखा हैं यह भव्य आयोजन महिलाओ की सामाजिक प्रशिक्षण देने का भी कार्य करता है इसका उद्देश्य है कि जब आम महिलाएं आपस में मिले तो उनमें सजावट अनुशासन एवं विनम्र बातचीत का तरीका हो नवाब शाहजहॉ बेगम स्वयं इस बाजार के लिए समय निकालकर इसमें आती थी। इस बाजार के रूप में महिलाओं को मिलती थी आज़ाद इस बाजार में आकर महिलाएं स्वतंत्र रूप से घुमती थी। जिसमें हिन्दु एवं मुस्लिम सभी समाज की महिलाएं आती थी।

महिलाओ के उत्थान के लिए नवाब सुल्तान जहॉ बेगम ने एक मासिक पत्रिका ''जिल्ले सुल्तानी'' के नाम से प्रकाशित करवाना शुरू किया।

**विधवा महिलाओं की दशा में सुधार**

रियासत में विधवा महिलाओं की संख्या अधिक थी। नवाब सुल्तान जहॉ बेगम ने कुछ समझदार और शिक्षित लोगों से सलाह मशवरा कर विधवा महिलाओं की स्थिति को सुलझाने के लिए प्रशिक्षण स्कूल खुलवाने का निर्माण लिया जिसमें गरीब और लाचार, असहाय महिलाऐं घरेलु दैनिक काम में आने वाली बस्तओं को सीखकर आत्मनिर्भर बन सकें। भोपाल रियासत की चारों नवाब बेगमों द्वारा रियासत की महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए अथक प्रयत्न किये गये जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें सफलता हुई और महिलाओं की स्थिति में सुधार आया, जो सुधार हुए वे निम्नलिखित हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में, नवाब सुल्तान जहां बेगम ने रियासत में स्कलों का जाल बिछा दिया जिससे बालिकाऐं पढ़ने गई और शिक्षा का कॉफी विकास हुआ।

**निष्कर्ष**

प्रस्तुत अध्ययन में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए किये गये प्रयासों में शिक्षा एवं यातायात की व्यवस्था बेगमात के समय पुरानी शिक्षा का प्रचलन समाप्त हो रहा था। और नई शिक्षा का प्रचलन प्रारंभ हो गया था। और जनता में शिक्षा की जागरूकता उत्पन्न की विशेष बालिकायों की शिक्षा पर अधिक बल दिया यद्यपि स्वतंत्रता के पास देश के सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियों में जितनी तीव्रता से परिवर्तन आया उससे नारी को भी धर से निकलने, शिक्षा प्राप्त करने तथा स्वय को अभिव्यक्त करने के अनेक अवसर मिलने लगे। नबाव सुल्तान जहॉ बेगम द्वारा विधवा एवं असहाय महिलाओं के लिए प्रशिक्षण स्कूलों की स्थापना की गई जो सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति के लिए सराहनीय प्रयास रहा । यद्यपि महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए भोपाल रियासत की महिला शासकों का पूर्ण योगदान रहा है और वर्तमान समय में म.प्र. शासन के पूर्ण प्रयास हो रहे है जैसे बेटी बचाओ अभियान, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं। परंतु महिला विकास या महिला सशक्तिकरण तब ही संभव है जब समाज की संपूर्ण मानसिकता, दृष्टि और सोच में परिवर्तन हो।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. टाइम्स ऑफ इण्डिया ''भोपाल टाईम'' दिनांक – 07-04-2016A
2. अंजुम फोज़िया '' मुस्लिम कामकाजी महिलाओं की स्थिति का एक समाज शास्त्रीय (अध्ययन भोपाल जिले के विशेष संदर्भ में)'' अप्रकाशित शोध प्रबंध बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल।
3. खॉ मो. हनीफ (2006) भोपाल रियासत, राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर, भोपाल पृष्ठ- 34, 35, 59।